



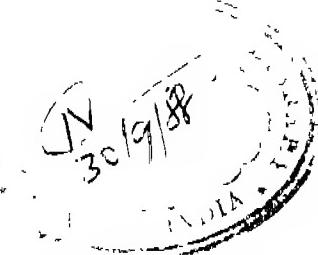
भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY



सं. 139]

नई दिल्ली, बुधवार, मार्च 23, 1988/चैत्र 3, 1910

No. 139]

NEW DELHI, WEDNESDAY, MARCH 23, 1988/CHAITRA 3, 1910

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या ही आती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

*Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as
a separate compilation*

वित्त मंत्रालय
(ग्राहिक कार्य विभाग)

प्रधिमूलना

नई दिल्ली, 23 मार्च, 1988

किसान विकास पत्र नियम, 1988

सा. का. नि. 370(अ)—केन्द्रीय सरकार, सरकारी बचत-पत्र अधिनियम, 1959 (1959 का 46) की धारा 12 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात् :—

1. संक्षिप्त नाम और प्रारंभ :—(1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम किसान विकास पत्र नियम, 1988 है।

(2) ये 1 अप्रैल, 1988 को प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषाएँ :—इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ में अन्यथा अपेक्षित न हो,—

(1) “अधिनियम” में सरकारी बचत-पत्र अधिनियम, 1959 (1959 का 46) अभिप्रेत है;

(2) “नकद” से अभिप्रेत है भारतीय करेंसी में नकद;

(3) “पत्र” में किसान विकास पत्र अभिप्रेत है,

(4) “डाक घर” में भारत में कोई ऐसा विभागीय डाकघर अभिप्रेत है जो बचत बैंक का कार्य कर रहा है;

(5) “पहचान पर्ची” में ऐसी पहचान पर्ची अभिप्रेत है जो नियम 9 के अधीन किसी पत्र के धारक को जारी की जाती है;

(6) उन शब्दों और पदों के जो इसमें प्रयुक्त हैं और परिभासित नहीं हैं, किन्तु डाक-घर बचत-पत्र

नियम, 1960 में परिभाषित हैं, वही अर्थ होंगे जो उन नियमों में है।

3. डाकघर बचत-पत्र-नियम, 1960 का लागू होना:— डाक घर बचत पत्र नियम, 1960 के उपबंध, जहाँ तक हो सके, ऐसे विषयों के संबंध में लागू होंगे जिनके लिए, इन नियमों में कोई उपबंध नहीं किया गया है।

4. पत्रों का अंकित मूल्य:—(1) किसान विकास पत्र 1,000 रु., 5,000 रु. और 10,000 रु. के अंकित मूल्यों में जारी किए जाएंगे।

5. पत्रों का क्रय:—नियम 4 में विनिर्दिष्ट अंकित मूल्य बाने कितने ही पत्रों का क्रय किया जा सकेगा।

6. पत्रों के प्रकार और उनका जारी किया जाना:—

(1) पत्र निम्नलिखित प्रकार के होंगे, अर्थात्:—

(क) एकल धारक प्रकार के पत्र;

(ख) मंयुक्त "क" प्रकार के पत्र; और

(ग) मंयुक्त "ख" प्रकार के पत्र।

(2) (क) एकल धारक प्रकार के पत्र निम्नलिखित को जारी किए जाएंगे:—

(1) वयस्क को, स्वयं उसके लिए या किसी अवयस्क की ओर से या किसी अवयस्क को;

(2) किसी बैंककारी कंपनी को;

(3) किसी कंपनी को;

(4) किसी निगम को,

(5) किसी संगम, संस्था या निकाय को जो तत्समय प्रवृत्ति किसी विधि के अधीन सोमाइटी के रूप में रजिस्ट्रीकृत है;

(6) किसी फर्म को जो भागीदारी अधिनियम, 1932 (1932 का 9) के अधीन रजिस्ट्रीकृत है;

(7) स्थानीय प्राविकारी को।

(ख) मंयुक्त "क" प्रकार के पत्र दो वयस्कों को मंयुक्त रूप से जारी किए जा सकेंगे जो दोनों धारकों को मंयुक्त रूप में या उत्तरजीवी को संदेय होंगे।

(ग) मंयुक्त "ख" प्रकार के पत्र दो वयस्कों को संयुक्त रूप से जारी किए जा सकेंगे जो धारकों में से किसी को या उत्तरजीवी को संदेय होंगे।

7. पत्रों के क्रय के लिए प्रक्रिया:—(1) कोई व्यक्ति या नियम 6 में विनिर्दिष्ट निकाय जो पत्र का क्रय करना चाहता है, इन नियम से उपाबद्ध प्ररूप "क" में एक आवेदन स्थग्य श्रयता अपने संदेशवाहक या लघुबचत स्कीमों के किसी

प्राधिकृत अधिकारी के माध्यम से किसी डाकघर में प्रस्तुत करेगा।

(2) किसी पत्र के क्रय के लिए संदाय किसी डाक घर में निम्नलिखित किसी रीति से किया जा सकेगा, अर्थात्:—

(1) नकद; या

(2) स्थानीय रूप से निष्पादित चैक, संदाय आदेश या मांगदेय ड्राफ्ट द्वारा जो डाकपाल के नाम में लिखा गया हो, या

(3) उसी डाक घर में ऋता के नाम में जमा डाक घर बचत बैंक खाते में प्रत्याहरण के लिए पासबुक सहित सम्म्यक् रूप से हस्ताक्षरित प्रत्याहरण प्ररूप या चैक प्रस्तुत कर के।

8. पत्रों का जारी किया जाना:—(1) नियम 7 के अधीन संदाय किए जाने पर, तब के सिवाय जब संदाय किसी चैक, संदाय आदेश या मांगदेय ड्राफ्ट द्वारा किया जाता है, पत्र तत्काल जारी किया जाएगा और ऐसे पत्र की तारीख संदाय की तारीख होगी।

(2) जहाँ किसी पत्र के क्रय करने के लिए संदाय चैक, संदाय आदेश या मांगदेय ड्राफ्ट द्वारा किया जाता है, वहाँ पत्र, यथास्थिति, चैक, संदाय आदेश, मांगदेय ड्राफ्ट के आगमों के बसूल किए जाने से पहले जारी नहीं किया जाएगा और ऐसे पत्र की तारीख, यथास्थिति, चैक संदाय आदेश या मांगदेय ड्राफ्ट के भुनाएँ जाने की तारीख होगी।

9. पहचान पर्ची—(1) यदि किसी पत्र के धारक या धारकों द्वारा किसी भी समय पहचान पर्ची जारी करने के लिए निवेदन किया जाता है तो ऐसे धारक या धारकों को पहचान पर्ची, उसके या उनके द्वारा उस पहचान पर्ची पर हस्ताक्षर किए जाने पर जारी की जाएगी।

(2) पत्र के अंतिम स्पष्ट में भुनाएँ जाने के समय पहचान पर्ची अभ्यर्पित की जाएगी या उसके द्वारा जाने की दशा में ऐसे खोने की घोषणा डाक घर को दी जाएगी।

10. खाएँ हुए या नष्ट पत्र का प्रतिस्थापन:—(1) यदि कोई पत्र खो जाता है, चोरी हो जाता है, नष्ट हो जाता है, विछुन हो जाता है या विरूपित हो जाता है तो उसका हुक्मदार व्यक्ति जारी करने वाले डाकघर को पत्र की दूसरी प्रति के जारी किए जाने के लिए आवेदन कर सकेगा।

(2) जहाँ उपनियम (1) के अधीन कोई आवेदन, जारी करने वाले डाकघर से भिन्न किसी डाक घर को किया जाता है वहाँ उक्त डाकघर ऐसे आवेदन को जारी करने वाले डाकघर को अंग्रेजित करेगा।

(3) उपनियम (1) के अधीन प्रत्येक आवेदन के माध्य-

(क) निम्नलिखित विशिष्टियों को, जैसे, पत्र का

मंस्यांक, रकम और तारीख तथा वे परिस्थितियों
वर्णित करने वाला एक निवरण होगा जिनमें किसी
हानि चोरी, नाश, विकृति या विरुद्ध दुआ है;

(ख) पहचान पर्ची, यदि कोई हो, होगी।

(4) यदि जारी करने वाले डाक घर के डाकपाल का
पत्र की हानि, चोरी, नाश, विकृति, या विरुद्ध के बारे में
समाधान हो जाता है तो वह एक या अधिक प्रतिभूतों सहित
अथ वा बक प्रत्याभूति सहित डाक विभाग द्वारा अधिकारित
प्ररूप में क्षतिपूर्ति बंधपत्र दिए जाने पर आवेदक को दूसरा
पत्र जारी करेगा:—

परन्तु जहाँ ऐसा आवेदन विकृत या विरुद्ध पत्र के
संबंध में किया जाता है वहाँ दूसरा पत्र किसी ऐसे क्षतिपूर्ति
बंधपत्र, प्रतिभूति या प्रत्याभूति के बिना जारी किया जा सकेगा
यदि विकृत या विरुद्ध पत्र का और पहचान पर्ची का,
यदि कोई हो अव्यर्थण कर दिया जाता है और पत्र मूल रूप
से जारी किए गए पत्र के रूप में पहचाने जाने योग्य है।

(5) उपनियम (4) के अधीन जारी किया गया
दूसरा पत्र सभी प्रयोजनों के लिए मूल पत्र के समतुल्य
माना जाएगा सिवाए तब के जब वह जारी करने वाले
डाकघर से भिन्न किसी डाकघर से पूर्व सत्यापन के बिना
नहीं भुनाया जा सकता है।

11. भुनाए जाने का स्थान:—कोई पत्र उसके जारी
करने वाले डाक घर से भुनाया जाएगा;

परन्तु कोई पत्र किसी अन्य डाक घर से भुनाया जा
सकेगा यदि उस डाक घर के भारसाधक अधिकारी का
पहचान पत्र के पेश किए जाने पर या जारी करने वाले
डाक घर से सत्यापित किए जाने पर यह समाधान हो जाता
है कि भुनाए जाने के लिए पत्र को प्रस्तुत करने वाला
व्यक्ति उसका हकदार है।

12. परिपक्व होने पर भुनाया जाना:—किसी भी अंकित
मूल्य के पत्र की परिपक्वता अवधि साढ़े पांच वर्ष होगी जो
पत्र की तारीख से प्रारम्भ होगी। पत्र की परिपक्वता अवधि
की समाप्ति के पश्चात् किसी समय उसके भुनाए जाने पर
संदेय रकम, जिसमें ब्याज सम्मिलित है, 1,000 रु. के
अंकित मूल्य के लिए 2,000 रु. और किसी अन्य अंकित
मूल्य के लिए आनुपातिक दर से होगी।

13. समयपूर्व भुनाया जाना:—(1) नियम 12 में
किसी बात के होते हुए भी, किसी पत्र को किसी भी समय
निम्नलिखित किसी परिस्थिति में समयपूर्व भुनाया जा सकेगा:

- (क) धारक की, या संयुक्त धारकों की दशा में किसी
धारक की, मूल्य होने पर,
(ख) ऐसे गिरवीदार द्वारा समपहरण पर जो राजपत्रित
सरकारी अधिकारी है;

(ग) न्यायालय का आदेश होने पर।

(2) यदि कोई पत्र उपनियम (1) के अधीन पत्र
की तारीख से एक वर्ष की अवधि के भीतर भुनाया जाता
है तो केवल पत्र का अंकित मूल्य संदेय होगा और कोई
ब्याज नहीं दिया जाएगा।

(3) यदि कोई पत्र उपनियम (1) के अधीन पत्र की
तारीख से एक वर्ष की समाप्ति के पश्चात् किन्तु आई वर्ष
की समाप्ति के पूर्व भुनाया जाता है तो पत्र के अंकित मूल्य
का और साथ ही साधारण ब्याज का संदाय किया जाएगा
जो डाक घर परिकलित बचत खाता नियम, 1981 के अधीन
खाते को समय-समय पर लागू दर से ऐसे संपूरित मामलों
के लिए परिकलित किया जाएगा जिसके लिए पत्र धारित
था।

(4) नियम 12 में, या उपनियम (1) में किसी बात
के होते हुए भी, यदि कोई पत्र, पत्र की तारीख से आई
वर्ष की समाप्ति के पश्चात् किसी समय भुनाया जाता है तो
संदेय रकम, जिसमें ब्याज सम्मिलित है, 1,000 रु. अंकित
मूल्य के लिए नीचे की सारणी में विनिर्दिष्ट रूप में
होगी और किसी अन्य अंकित मूल्य के लिए आनुपातिक
दर से होगी:

सारणी

पत्र की तारीख से उसके भुनाए संदेय रकम जिसमें ब्याज
जाने की तारीख तक की अवधि सम्मिलित है (रु.)

1

2

1. 2 वर्ष और 6 मास या उससे अधिक किन्तु 3 वर्ष से कम।	1280
2. 3 वर्ष या उससे अधिक किन्तु 3 वर्ष और 6 मास से कम।	1380
3. 3 वर्ष और 6 मास या उससे अधिक किन्तु 4 वर्ष से कम।	1450
4. 4 वर्ष या उससे अधिक किन्तु 4 वर्ष और 6 मास से कम।	1590
5. 4 वर्ष और 6 मास या उससे अधिक किन्तु 5 वर्ष से कम।	1690
6. 5 वर्ष या उससे अधिक किन्तु 5 वर्ष और 6 मास से कम	1880

14. पत्र का भुनाया जाना:—(1) किसी पत्र के अधीन शोध्य रकम के प्राप्त करने का हकदार व्यक्ति, उसके भुनाए जाने पर, उसके पीछे संदाय प्राप्त करने के प्रमाण स्वरूप हस्ताक्षर करेगा।

(2) किसी ऐसे अवयस्क की ओर से जो अब वयस्क हो गया है, क्य किए गए पत्र की दशा में, पत्र पर स्वयं ऐसे व्यक्ति द्वारा हस्ताक्षर किए जाएंगे किन्तु उसके हस्ताक्षर ऐसे व्यक्ति द्वारा जिससे वह उसकी ओर से क्य किया है या ऐसे किसी अन्य व्यक्ति द्वारा जिसे डाकपाल जानता है, अनुप्रमाणित किए जाएंगे।

15. डाकघर का उत्तरवायित्व:—डाकघर, किसी व्यक्ति द्वारा पत्र का कल्पा अभिप्राप्त करने और उसे कपटपूर्वक भुनाने से धारक को हुई किसी हानि के लिए उत्तरवायी नहीं होगा।

16. भूल सुधार:—डाक विभाग या महाडाकपाल या डाक प्रभागों के प्रधान अपनी-अपनी अधिकारिता में, स्वप्रेरणा से या इन नियमों के अनुसरण में जारी किए गए पत्र में हितबद्ध किसी व्यक्ति द्वारा आवेदन किए जाने पर उस पत्र की बाबत किसी लेखन या गणित संबंधी भूल का सुधार कर सकेंगे, परन्तु यह तब जब कि उससे सरकार को या किसी ऐसे व्यक्ति को कोई वित्तीय हानि नहीं होती है।

17. शिथिल करने की शक्ति:—जहां केन्द्रीय सरकार का यह समाधान हो जाता है कि इन नियमों के किसी उपबंध के प्रबंधन से, किसी पत्र के धारक या धारकों को असम्यक कष्ट होता है, वहां वह, ऐसे कारणों से जो लेखबद्ध किए जाएंगे, उस उपबन्ध की अपेक्षाओं को ऐसी रीति से जो अधिनियम के उपबन्धों से असंगत न हो, आदेश द्वारा शिथिल कर सकेगी।

प्रृष्ठ—क

(नियम 7 देखिए)

किसान विकास पत्र के क्य के लिये आवेदन का प्रृष्ठ

ऋग सं.

प्रेषिती,

डाकपाल,—————— डाक घर।

मैं/हम—

(क) —————— और —————— के नाम में

(ख) अवयस्क की दशा में, उसके जम्म की तारीख—————— जो अवयस्क के माता या पिता/संरक्षक/श्रीमती—
द्वारा भुनाया जा सकेगा।

(ग) —————— (सोमायठी या कंगनी, आदि) के माध्यम से —————— (सदस्य, आदि) के नाम में एकल/संयुक्त “क”/संयुक्त “ख” प्रकार के किसान विकास पत्र के क्य के लिये नकद/चेक सं. —————— द्वारा रु. (केवल —————— र.) निवित्त करता हूँ/करते हैं।

2. मैं/हम निम्नलिखित व्यक्ति (व्यक्तियों) को नामनिर्वेशित करता हूँ/करते जो मेरी/हमारी मूल्य पर संदाय प्राप्त करेगा/करेंगे।

ऋग सं. नामनिर्वेशिती का नाम

पूरा पता

अवयस्क नामनिर्वेशिती के जम्म की तारीख

- 1.
- 2.
- 3.

3. मैं/हम किसान विकास पत्र नियम, 1988 का पालन करने के लिये करार करता हूँ/करते हैं।

4. पत्र/पहचान पर्ची/हमारे अधिकारी—प्राधिकार सं. —————— या संदेशबाहक को, जो इस आवेदन को प्रस्तुत करता है, देंदिया जाये।

नामनिर्वेशन के साक्षी के हस्ताक्षर और पता

विनिधानकर्ता के हस्ताक्षर/अंगूठे का निशान

तारीख

पता

पत्र और पहचान पर्ची प्राप्त की

विनिधानकर्ता/संवेशबाहक /प्राधिकृत अधिकारी के हस्ताक्षर
तारीख

जो जम्म न ही उसे काट दीजिये।

धारक/धारकों के नमूना हस्ताक्षर पहचान पर्याप्त

डाक घर द्वारा भरे जाने के लिये

पत्र का क्रम सं. निर्गम कीमत रु.

भुताये जाने की
तारीख

डाकपात्र के आधार

आष्ट्रथर सहित टिप्पणियाँ, जैसे अंतरण, दूसरी
प्रति का जारी किया जाना, आदि

योग

तारीख

डाकपात्र के हस्ताक्षर

[फ. सं. 3/7/88-एन.एस.-II]
के.एस. शास्त्री, अपर सचिव

MINISTRY OF FINANCE
(Department of Economic Affairs)
New Delhi, the 23rd March, 1988

NOTIFICATION

THE KISAN VIKAS PATRA RULES, 1988

G.S.R. 370(E).—In exercise of the powers conferred by section 12 of Government Savings Certificates Act, 1959 (46 of 1959), the Central Government hereby makes the following rules, namely :—

(1) Short title and commencement.—(1) These rules may be called the Kisan Vikas Patra Rules, 1988.

(2) They shall come into force on the 1st day of April, 1988.

2. Definitions.—In these rules, unless the context otherwise requires,—

- (i) "Act" means the Government Savings Certificates Act, 1959 (46 of 1959);
- (ii) "cash" means cash in Indian currency;
- (iii) "certificate" means the Kisan Vikas Patra;
- (iv) "post office" means any departmental post office in India doing Savings Bank work;
- (v) "identity slip" means any identity slip issued to a holder of certificate under rule 9;

(vi) words and expressions used herein and not defined but defined in Post Office Savings Certificate Rules, 1960 shall have the meanings respectively assigned to them in these rules.

3. Application of Post Office Savings Certificate Rules, 1960.

The provisions of Post Office Savings Certificate Rules, 1960, so far as may be, apply in relation to matters for which no provision has been made in these rules.

4. Denomination of certificates.—(1) The Kisan Vikas Patra shall be issued in denominations of Rs. 1,000, Rs. 5,000 and Rs. 10,000.

5. Purchase of Certificate.—Any number of certificates of the denominations specified in rule 4 may be purchased.

6. Type of certificates and issue thereof.—(1) The certificates shall be of the following types, namely :—

- (a) Single Holder Type certificates;
- (b) Joint 'A' Type Certificates; and
- (c) Joint 'B' Type Certificates.

(2) (a) A Single Holder Type certificate may be issued to :—

- (i) an adult for himself or on behalf of a minor or to a minor;
- (ii) a banking company;

- (iii) a company;
- (iv) a corporation;
- (v) an association, institution or body registered as a society under any law for the time being in force;
- (vi) a firm registered under the Indian Partnership Act, 1932 (9 of 1932);
- (vii) a local authority.

(b) A Joint 'A' Type certificate may be issued jointly to two adults payable to both holders jointly or to the survivor.

(c) A Joint 'B' Type certificate may be issued jointly to two adults payable to either of the holders or to the survivor.

7. Procedure for purchase of certificate.—(1) Any person or body specified in rule 6, desiring to purchase a certificate, shall present at a Post Office an application in a Form A annexed to these rules either in person or through his messenger or an authorised agent of the small savings schemes.

(2) Payment for the purchase of a certificate may be made to a Post Office in any of the following modes, namely :—

- (i) by cash; or
- (ii) by locally executed cheque, pay order or demand draft drawn in favour of the Postmaster; or
- (iii) by presenting a duly signed withdrawal form or cheque together with the Pass Book for withdrawal from Post Office Savings Account standing in credit of the purchaser at the same Post Office.

8. Issue of certificates.—(1) On payment being made under rule 7, except where payment is made by a cheque, pay order or demand draft, a certificate shall be issued immediately and the date of such certificate shall be the date of payment.

(2) Where payment for the purchase of a certificate is made by cheque, pay order or demand draft, the certificate shall not be issued before the proceeds of the cheque, pay order or demand draft, as the case may be, are realised and the date of such certificate shall be the date of encashment of the cheque, pay order or demand draft, as the case may be.

9. Identity Slip.—(1) If a request for the issue of an identity slip is made at any time by holder or holders of a certificate, an identity slip shall be issued to such holder or holders on his or their signing the identity slip.

(2) The identity slip shall be surrendered at the time of the final discharge of the certificate or in case of its loss, a declaration of such loss shall be furnished to the post office.

10. Replacement of lost or destroyed certificate.—(1) If a certificate is lost, stolen, destroyed, mutilated or defaced, the person entitled thereto may

apply for the issue of a duplicate certificate to the post office of issue.

(2) Where an application under sub-rule (1) has been made to a post office other than the post office of issue, the said post office shall forward such application to the post office of issue.

(3) Every application under sub-rule (1) shall be accompanied by—(a) a statement showing particulars, such as, number, amount and date of the certificate and the circumstances attending such loss, theft, destruction, mutilation or defacement;

- (b) identity slip, if any;

(4) If the Postmaster of the post office of issue is satisfied as to the loss, theft, destruction, mutilation or defacement of the certificate, he shall issue a duplicate certificate on the applicant's furnishing an indemnity bond in form laid down by Department of Posts with one or more sureties or with a bank's guarantee:

Provided that where such application is made with respect to a certificate mutilated or defaced, a duplicate certificate may be issued without any such indemnity bond, surety or guarantee, if the certificate mutilated or defaced and the identity slip, if any, are surrendered and the certificate is capable of being identified as the one originally issued.

(5) A duplicate certificate issued under sub-rule (4) shall be treated as equivalent to the original certificate for all the purposes, except that it shall not be encashable at a Post Office other than the Post Office of issue without previous verification.

11. Place of encashment.—A certificate shall be encashed at the Post Office of its issue :

Provided that a certificate may be encashed at any other Post Office if the officer-in-charge of that Post Office is satisfied on production of identity slip or on verification from the post office of issue that the person presenting the certificate for encashment is entitled thereto.

12. Encashment on maturity.—(1) The maturity period of a certificate of any denomination shall be five and half years, commencing on the date of the certificate. The amount inclusive of interest, payable on encashment of a certificate at any time after the expiry of its maturity period shall be Rs. 2000 for denomination of Rs. 1000 and at proportionate rate for any other denomination.

13. Premature encashment.—(1) Notwithstanding anything contained in rule 12, a certificate may be prematurely encashed any time in any of the following circumstances :—

- (a) On the death of the holder or any of the holders in the case of joint holder;
- (b) On forfeiture by a pledgee being a Gazetted Government officer;
- (c) When ordered by a court of law.

(2) If a certificate is encashed under sub-rule (1) within a period of one year from the date of the certificate only the face value of the certificate shall be payable and no interest shall be payable.

(3) If a certificate is encashed under sub-rule (1) after the expiry of one year but before the expiry of two years and six months from the date of certificate, face value of the certificate, together with simple interest calculated at the rate applicable from time to time to accounts under Post Office Savings Account Rules, 1981 for the complete months for which the certificate has been held, shall be payable.

(4) Notwithstanding anything contained in rule 12 or in sub-rule (1), if a certificate is encashed any time after expiry of two years and six months from the date of certificate the amount payable inclusive of interest shall be as specified in the table below for denomination of Rs. 1000 and at a proportionate rate for any other denominations :

TABLE

Period from the date of the certificate to the date of its encashment.	Amount payable inclusive of interest. (Rs.)
1. 2 years and 6 months or more but less than 3 years.	1280
2. 3 years or more but less than 3 years and 6 months.	1380
3. 3 years and 6 months or more but less than 4 years.	1450
4. 4 years or more but less than 4 years and 6 months.	1590
5. 4 years and 6 months or more but less than 5 years.	1690
6. 5 years or more but less than 5 years and 6 months.	1880

14. Discharge of certificate.—(1) The person entitled to receive the amount due under a certificate shall, on its encashment, sign on back thereof in token of having received the payment.

(2) In the case of a certificate purchased on behalf of a minor who has since attained majority, the certificate shall be signed by such a person himself; but his signature shall be attested either by the person who purchased it on his behalf or by any other person who is known to the Post Master.

15. Responsibility of Post Office.—The Post Office shall not be responsible for any loss caused to a holder by any person obtaining possession of a certificate and fraudulently encashing it.

16. Rectification of mistakes.—The Department of Posts or the Post Master General or Heads of Postal Divisions in their respective jurisdictions, may either suo motu or upon an application by any person interested in any certificate issued in pursuance of these rules, rectify any clerical or arithmetical mistakes with respect to that certificate, provided that it does not involve any financial loss to the Government or to any such person.

17. Power to relax.—Where the Central Government is satisfied that the operation of any of the provisions of these rules causes undue hardship to the holder or holders of a certificate, it may, by order, for reasons to be recorded in writing, relax the requirements of that provision in a manner not inconsistent with the provisions of the Act.

FORM—A

[See Rule 7]

FORM OF APPLICATION FOR PURCHASE OF KISAN VIKAS PATRA

Serial No.

To

The Postmaster,

Post Office,

I/We hereby tender Rs.....(Rupeesonly)
in cash/by cheque No.

for the purchase of Kisan Vikas Patra of the type Single/Joint A/Joint B/

(a) in the name(s) of.....and.....

(b) in case of minor, his date of birth.....
encashable by the minor's parent/guardian....Shri/Smt.....(c) in the name of.....(Members etc.) through
Society or Company etc.

2. I nominate the person(s) named below who shall, on my death, receive payment.

S.I. No.	Name of Nominee	Full Address	Date of Birth of minor Nominee
1.			
2.			

3. I/We hereby agree to abide by the Kisan Vikas Patra Rules, 1988.

4. The Certificates/identity Slip may be made over to my/our agent Authority No.
or messenger who presents this application.

Signature/thumb impression of investor

Date

Address

Signature and Address of
witness to nomination

Delete whichever is not applicable.

Received the certificate(s) and
identity Slip.Signature of Investor/messenger/
authorised agent.

Date

IDENTITY SLIP

Specimen Signature of holder/holders

TO BE COMPLETED BY THE POST OFFICE

Serial Nos. of Certificates.	Issue Price Rs.	Date of encashment.	Initials of the Postmaster.	Remarks like transfer, issue of duplicate etc. with initials.
Total				

Date

Signature of Postmaster

[No. F. 3/7/88—NS-II]
 K. S. SASTRY, Addl. Secy.

